लिंध दीक्षा शताब्दि ग्रंथमाला नं 44 LABDHI DIKSHA SHATABDI GRANTHMALA -"Ahimsa hee Amrutam" (Hindi

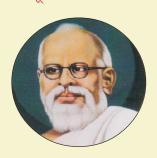
"Ahimsa hee Amrutam" (Hindi) "अहिंसा हि अमृतम् "



Author and Editor: Sri Vijay Rajyashsoorijee सम्पादक एवं लेखक : श्री विजय राजयश सूरिजी

आचार्य श्री लब्धि सूरीश्वरजी महाराज





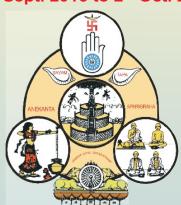


अहिंसा परमो धर्म: अहिंसा परमो दम: । अहिंसा परमं दानम्, अहिंसा परमं तप: ॥ अहिंसा परमं यज्ञ: अहिंसा परमं फलम् । अहिंसा परमं मित्रम् , अहिंसा परमं सुखम् ॥ 'अनुशासन पर्व' महाभारत

''अहिंसा हि अमृतम् ''

"Ahimsa hee Amrutam"

Vishva Ahimsa Saptah Ayojan in Sola Sangh on 25th Sept. 2016 to 2nd Oct. 2016.



Sponsored by:

Jimesh Dilipbhai Shah (on birthday)

Shree Sola Road Jain Sangh, Labdhi Vikramnagar

Shree Jain Swetamber Murti Pujak Maha Sangh, Ahmedabad

Karuna International, Chennai Suresh Kankaria M.: 9444024446) Padmavatiben Manubhai Zaveri

C.A. Manubhai B. Zaveri (et, on, of Every 75 Years)

(Sankalpuravala, Ambawadi)

Dr. M. M. Begani Mumbai M.: 9930765533

Fourth Edition

The Author & Editor

Revered Acharyadev Shri. Rajyash Sooreeshwarjee Maharaj, exponent of discourses, visionary and promoter of the renovation of various temples, the epitome of renunciation a great preacher is blessed by Shri. Labdhi Sooreeshwarjee M.S. & Shri. Vikram Sooreeshwarjee, M.S. his Grand Guruji and Guruji respectively.

Being a great personality, his bright and exalted oratory attracts the people at the very first sight. Infact, few seconds in his auspicious company, confers profound happiness and satisfaction. Deeply involved in various rites, rituals & disciplines, very compassionate towards everyone, he has a heart, very simple like a child and delicate like a flower.

He organised Jain Fair at Chennai in 1999 and National Conference of Non-Violence for Ahimsa in 2008 at Hyderabad which was an epoch making event. His dedication, devotion and involvement for the event are beyond words of appreciation.

Jirnoddhar of Vanachara Teerth near Baroda, and many new Teerths are being Established under his Nishra and guidelines in India and abroad.

Upadhyaya Vishrutyash Vijaya Gani
 Dt. 25-09-2016

अहिंसा सम्मेलन क्यों ?

अहिंसा आज मात्र संस्कृत, हिंदी एवं गुजराती भाषा का ही शब्द नहीं रह गया है। अब इंग्लिश शब्दकोष में भी यह शब्द पाया जाता है। कारण विश्व में अहिंसा की जितनी आवश्यकता पहले कभी नहीं थी, उतनी आवश्यकता आज है। सारा विश्व आतंकित है। मानव हत्या गाजर — मूली की तरह हो रही है। विस्फोट आज दुनिया के कोने-कोने में हो रहा है। मानव को जीवित रखने की सामग्री हमारे पास है, उससे अधिक मारने की है। हम परमाणु—शस्त्रों को नहीं चलाने की बात करते हैं। पर वह 'भय की अहिंसा' है। 'स्नेह की अहिंसा', 'प्रेम की अहिंसा', 'शांति की अहिंसा', 'मोहब्बत की अहिंसा'हमारे पास कहाँ है?

वस्तुत: लड़ना-मारना ये सब मानव में रही हुई पाशविक वृत्तियाँ है। इन वृत्तियों का उर्ध्वीकरण आत्मचेतना के जागरण से ही संभव है।

आज का सारा युग भय से एवं भ्रम से आक्रांत है एवं दौड़ हमारी बहुत तेज रफ्तार से बढ़ी है, हमारे पास सही दिशा नहीं है। सच कहें तो हम दिशाशून्य ही नहीं हृदयशून्य भी हो गये हैं। पर उस दुष्चक्र की गित जरूर पलटेगी। अंधेरा दूर होगा। उजियाला जरूर आयेगा। श्री कृष्णजी की भविष्यवाणी है —'सम्भवामि युगेयुगे' दुष्कृत की वृद्धि कड़ी धूप जैसी है। धूप बढ़ती है, पानी सूख जाता है, दुनिया त्रस्त हो जाती है, सर्वत्र त्राहिमाम् होता है, बस उसी समय बारिश आती है। हिंसा के ताप की शांति अहिंसा से जरूर होगी, पर आकाश में पानी नहीं होता है, पानी सागर से, नदी से, सरोवर से ही उड़ कर आकाश में पहुंचता है। बादल बनते हैं, बारिश आती है।

हम सब को भाप बनकर उड़ना पड़ेगा, उठना पड़ेगा, शांति की बारिश करनेके लिये अपने अस्तित्व को विलीन करना पड़ेगा।

आज भी दुनिया में ऐसे परिबल है। मोती की भांति चमकते हैं। जरूरत है एक माला बनानेकी।

आज इस अहिंसा सम्मेलन में देख पायेंगे कि जन्मजात मुसलमान चिंतक एवं विद्वान भी अहिंसा के पुजारी बनकर आये है कत्लखानों की निरर्थकता आज सब समझने लगे हैं। 'शाकाहार ही विश्व आहार है' ये सबको समझ में आ रहा है। आतंकवाद फैलाने वाले देशों को आज अहिंसा का आश्रय ढूंढना पड़ता है। शस्त्रों से सारी दुनिया को आक्रांत करनेवाले आज दुनिया को नि:शस्त्रीकरण की ओर ले जाने के लिये मजबूर बने है। इस सब परिबलों को एकत्रित करना आवश्यक है। हम अनंत बिंदु है, हमें मिलकर सिंधु बनना है, समझना है कि हिंसा से उत्पन्न भोजन, पदार्थ या कोई भी साधन को उपयोग में लेने वाले न हिंसक है, न हिंसा के पक्षपाती है बल्कि वे अज्ञानी है। कुछ जानते भी हैं तो अहिंसा से निष्पन्न साधनों से अपरिचित है, उनमें स्वच्छ मित है, पर वे गित नहीं कर पा रहे हैं।

अहिंसा सम्मेलन का इस दिशा में प्रयास है कि हम अहिंसक भाववाले समस्त सज्जन संगठित बने। संगठन से पैदा होती है— एक महान आस्था, आस्था से पैदा होती है— महान ऊर्जा, ऊर्जस्वल महानुभावों से दुनिया प्रकाशमय बन जाती है।

हमारा यह सम्मेलन बहुत मर्यादित साधन एवं शक्ति से आगे बढ़ा है,पर सफलता के क्षितिज का हमें पूरा अंदाज है। हताशा एवं निराशा देने वाले परिबलों को हमें परास्त करना है। अहिंसा के उद्घोष का भगवान, तीर्थंकर, अवतारी पुरूष, संत, महंत, आत्माओं की इन भव्य विरासतों को हमें विश्वव्यापी बनाना है।

बस, सर्वदेवमय एवं सर्वतीर्थमय प्रभु पार्श्वनाथ भगवान् एवं महान ऊर्जा प्रदात्री राजराजेश्वरी पद्मावती माता से हमारी प्रार्थना है कि अहिंसा माता का स्वर गुंजित करे एवं प्राणीमात्र के चेहरे पर आनंद की रेखाएं लहराने लगे।

अहिंसा सम्मेलन 3-4 नवम्बर 2012 को होने जा रहा है। उस अवसर पर पुन: मुद्रण हो रहा है।



विजय राययशसूरि 25-09-2016 Shree Sola Sangh, Ahmedabad.

Books Available at:

Suresh Kankariya M. : 9444024446 Jimeshbhai M. : 9724724368

Shaileshbhai M.: 9228285379, 9726304612

हीं रचयिता

प.पू.आ.देव श्रीमद् विजय राजयशसूरीश्वरजी म.सा (तर्जः दिल लूटनेवाले जादूगर)

अहिंसा भाव से जीओ, अहिंसा ध्यान में लाओ, अहिंसा विश्वमाता है, अहिंसा विश्वव्यापी है..1 सुन लो बात तो मेरी, अहिंसा केरी ये भेरी, जगत को आराम वो देती,परम सुखशांति की हेली..2 जीव सब चाहता जीना, न मरना कौई भी चाहे, फिर तु क्यो किसे मार ? जीवन में न्याय ना माने..3 अहिंसा मान है देवी, अहिंसा आधार जग की अहिंसा से टिकोगे तुम, अहिंसा नहीं तो सब है गुम..4 अहिंसा विश्व का आधार, अहिंसा शांति मूलाधार, अहिंसा सर्व धर्माधार अहिंसा सर्व व्रत का सार....5 हमारी आयु है कुछ साल, हम क्यों चलते बुरी चाल? जो पाले अहिंसा ख्याल, आखिर हो जाये वो निहाल...6 भयंकर राग द्वेषो से, बुरे ये मेरे तेरे से, लडते जो सदा आये, तनिक ना सुख वो पाये...7 हम है शुद्ध ही आतम, हमें बनना है परमातम, ऋषि मुनि को तुम सुनो, जीवन के सार को चुनो...8 अहिंसा का यह सम्मेलन, पवित्र भावों का मिलन है, जगत में बात है सच्ची, रहे करणी ऐसी भरणी....9 हमारे खान – पानो में, हमारे हिलने–चलने में, हमारी जीवन की यात्रा में, न दु:खी कोई हो प्राणी...10 कहे राजयश सुन लो, अहिंसा देवी को जानो, जीवन को चैन से काटो, सबको सुख ही बॉटों...11

Preface

"If we have not yet become vegetarians,we have not even sighted the portals of the Kingdom of God."

Once upon a time in a village in ancient India, there was a little goat and a priest. The priest wanted to sacrifice the goat to the Gods. He raised his arm to cut the goat's throat, when' suddenly the goat began to laugh. "The priest stopped, amazed and asked the goat, "Why do you laugh? Don't you know that I'm about to cut your throat?". "Oh yes" said the goat, "After 499 times of dying and being reborn as a goat, I will be reborn as a human being.

"Then the little goat began to cry. The great priest said, "Why are you crying now?" And the little goat replied, "For you, poor priest. 500 lives ago, I too was a great priest and sacrificed goats to the Gods". The priest dropped to his knees, saying, "Forgive me, I beg you. From now on, I will be the guardian and protector of every goat in the land."

"Everyone in the business: the one who abets,

the one who cuts, the one who kills, the one who sells, the one who prepares, the one who offers, the one who eats .. all are killers." "And the flesh of slain beast in his body will become his own tomb. For I tell you truly, he who kills, kills himself, and who so eats the flesh of slain beasts, eats the body of dead."

"God doesn't like the flesh and blood that you offer as sacrifice. He expects nothing but your absolute faith."

Ahimsa means reverence for life, which in turn calls for compassion and service to all living beings. "I renounce my animosity and seek forgiveness from all beings. Let all beings forgive me and- give up their animosity. I have friendliness towards all and animosity for none."

What should one do in his day-to-day life .. that is, what is the maximum non-violnce, the ornament of the brave.

Whilst it is true that man cannot live without air and water, the thing that nourishes the body is food. Hence the saying 'food is life'. There is a growing school, which is strongly of the opinion

that anatomical and physiological evidence is in favour of man being a vegetarian. "His teeth, his stomach, intestines etc., seem to prove that nature has meant man to be a vegetarian".

"Regulation of diet, Restricting it to satvic food, taken in moderate quantities, is the best of all rules of conduct and the most conducive to the development of satvic 'pure' qualities of mind. These in turn help one in the practice of Self-enquiry."

"Spiritual unfoldment will come rather by regulating eating." "Food affects the mind. For the practice of any kind of yoga, vegetarianism is absolutely necessary .. since it makes the mind more satvic .. pure and harmonious." Ahimsa .. non-violence.. stands foremost in the code of discipline for the yogis.

Dr. M. M. Begani

Consultant General, Specialist Surgeon, Bombay Hospital

Abhishek Day Care

#74/78, Indian Cancer Society & Medical Research,
M. Karve Road, Opp. Cooperage Ground, Mumbai-400 021
Ph:09930765533 E-mail: abhishekdaycare9@hotmail.com
13 th August, 2012 Mumbai

लिब्ध दीक्षा शताब्दि ग्रंथमाला प्रकाशन ने बेंगलोर चातुर्मास के दौरान श्री विजय राजयश सूरीश्वरजी महाराज लिखित कुल करिबन 20 पुस्तकों का मुद्रण हुआ उनकी सूची इस तरह है।

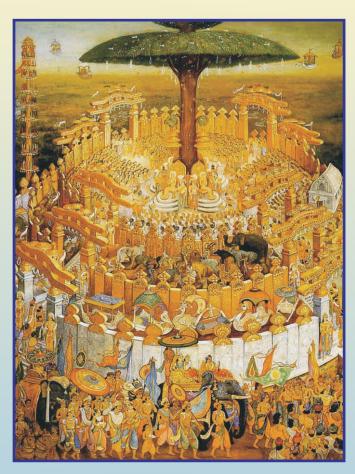
- 1. Like to know Must to follow English, Kannada/Tamil
- 2. Know To Enlighten- English, Kannada, Tamil
- 3. Pearls of Wisdom English, Bengali
- 4. Outline of Jainism English-Kannada, Tamil, Telugu
- 5. A Bhaav Yatra to Shatrunjaya English with Audio CD
- 6. Labdhi Baal Varta English, Gugarati
- 7. Remedy without Medicine Kannada
- 8. Ahimsa Hee Amrutam English with Audio Vcd, Kannada, Tamil, Telugu, Malayalam, Urdu, Hindi, Bengali, Marathi

इन सभी पुस्तकोंका प्रकाशन करने में प्रोफेसर महाराज उपाद्याय श्री विश्रुतयश म.सा. का बडा योगदान रहा. उन्होंने जैन धर्म —और अहिंसा का प्रसार जैन व अजैन लोगोंतक पहुंचाने का प्रयास किया है।

आप भी इस तरह का प्रसार इन सभी पुस्तकों का पुन: मुद्रण करके लाभ उठा सकते है। इसके लिये नीचे दिये गये ई—मेल से कृपया सम्पर्क करे

> profmaharaj@yahoo.co.in profmaharaj01@gmail.com

You can also send your feed back / responses to.
1. labdhivikram@gmail.com
Visit us at www.labdhivikramraj.org



सह अस्तित्व की आधारशिला—''अहिंसा''

मनुष्य अकेला नहीं रह पाता है। उसे साथ में ही रहना पड़ता है।

मनुष्य साथ चाहता है
साथ देना चाहता है
साथ रहने की कला पनपती है अहिंसा से....
'अहिंसा सह अस्तित्व की आधारशिला है'
हे तीर्थंकर प्रभो।
जब हमें सारे विश्व को एक परिवार बनाना है,
तो हम अहिंसा के बिना कैसे आगे बढ़ेंगे?
धन्य है आप के समवसरण को।।
जहाँ अनेक जन्मों के वैर का अंत आ जाता है
प्राणी मात्र साथ में रह कर परमानंद पाते हैं।
''अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सित्नधी वैरत्याग''



''अहिंसा का मधुर संगीत जीव मात्र से करे प्रीत ''

'प्रेम' जब वासना से मुक्त होजाता है....
प्रेम जब मनुष्य मात्र में —प्राणी मात्र में......
जीव मात्र में फैल जाता है
तब पूर्णावतार का स्वरूप लेता है प्रेम बाहर से
भी दिखे — वस्तुत: अहिंसा का पूर्ण स्वरूप है।
हे कृष्णजी!
आप के पास खड़ी गौ माता संपूर्ण विश्व है।
आप के सिर पर लगी मोरपंखी संपूर्ण—
पक्षी जगत को प्रेम का आहवान है।
आपकी बांसुरी समस्त जीव सृष्टि में —
अहिंसा रूपी प्रेम का मधुर संगीत बहाती है।





करूणा

खुद का दु:ख वेदना है। दूसरे का दु:ख जब बर्दास्त नहीं होता है तब संवेदना कहलाता है।

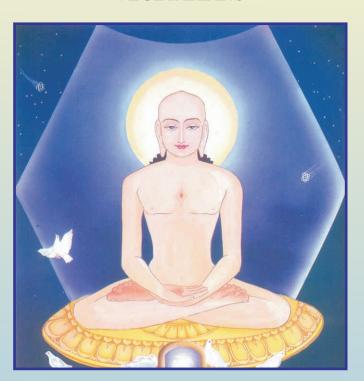
'वेदना' स्वार्थ की अभिव्यक्ति है। 'संवेदना'सम्पूर्ण जीव विश्व से संबंध रखनेकी कला है। संवेदना शून्य मन, मन नहीं पत्थर है। हे गौतम बुद्ध! इस संवेदना ने आपको अहिंसामय बनाया।

हे गौतम बुद्ध! इस सर्वेदना ने आपको अहिसामय बनाया। आपका कहना है कि....

> स्व की वेदना बुद्धू भी जानता है। सर्व की वेदना जानने से ही 'बुद्ध' बना जाता है।



For meditation, we should be VEGETARIANS



Love animals, Do meditation 20

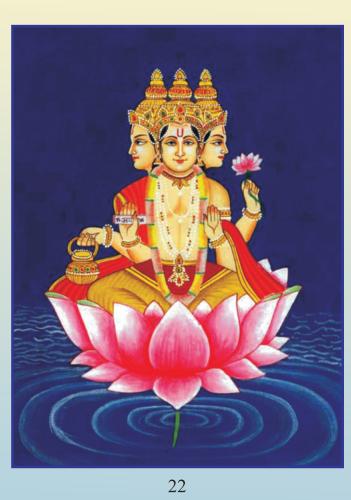
''अहिंसा की करो पहचान सभी गुणों की हैं ये खान ''

अहिंसा के पर्याय हैं — शांति, क्षमा, दया, समाधि, विशुद्धि, रक्षा, संवर, यतना, पवित्रता, शुचिता । अहिंसा का अर्थ है— 'शांति ' सब चाहते हैं कि हम शांतिमय बने रहें। हम चाहते हैं कि हमारे प्रति सब शांतिमय जीवन राह अपनायें। अत: शांतिमय अहिंसा अनिवार्य है।

> "जहाँ है शांति......वहाँ है अहिंसा की उत्क्रान्ति"

Mankind must put an end to War or War will put an end to Mankind.

John F. Kennedy.



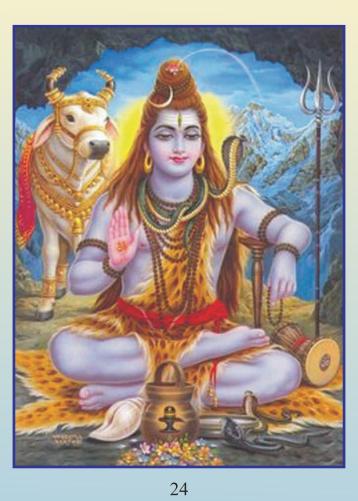
''सर्जन''

'सर्जन' शब्द ही हमें प्रसन्नता देता है। 'सर्जन' में कला है, कुशलता है, करिश्मा है। सृष्टि का सर्जन कितनी सुंदर कल्पना है।।

सर्जन अहिंसा है... विसर्जन हिंसा है। सर्जन विकास है... विसर्जन विनाश है। समस्त सृष्टि का आधार है अहिंसा।

'हे ब्रह्मन्' तुझे सृष्टिकर्ता मानकर जो एक जीव का नाश करता है वह तेरे सर्जन की खिल्ली उड़ाता है।

> 'अहिंसा' सर्जन ही नहीं बल्कि प्यार भरा महासर्जन है।



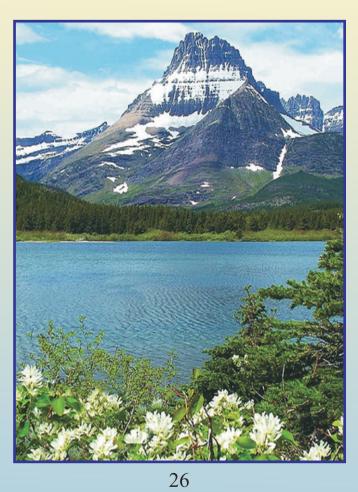
''दया धर्म धारेंगे—जीव हिंसा नहीं करेंगे ''

जन्म के साथ मरण जुड़ा है। उदय के बाद अस्त होता है। खिलने के साथ मुर्झाना भी होता है।

किसी का भी अंत करना मानवीय अधिकार नहीं है। अत: महादेव ने ही खुद के हाथ में संहार का कार्य रखा है। वस्तुत: संहार प्रकृति का धर्म है। अत: 'हिंसा' प्रकृति पर आक्रमण है। देव का ही नहीं महादेव का अपराध है। अपने चरणों में रहे 'नंदी' को महादेव सदा ही कहते हैं...

> बस! पशु जगत की ही नहीं, प्राणी मात्र की हिंसा कोई न करे।



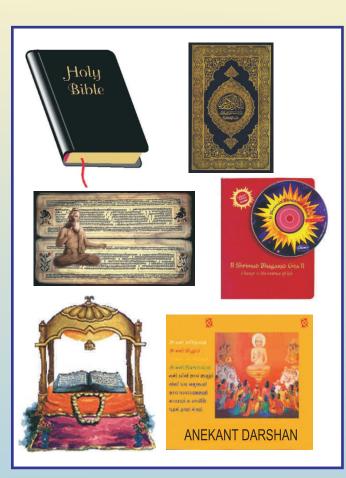


''अहिंसाकी वृद्धि ही... ...सृष्टिकी समृद्धि ''

सृष्टि सब जीवों की संपत्ति है। इस संपत्ति पर एकाधिकार स्थापित करने की चेष्टा हिंसा है। अत: अनिधकार चेष्टा परिहार रूप अहिंसा अनिवार्य है।

प्राकृतिक सौन्दर्य प्रसन्नता देने वाला है प्राकृतिक संपत्ति—नदी, सरोवर, झील,पहाड़ एवं जीवन को जीवंत रखनेवाली शक्ति अहिंसा है। सर्व शक्ति के आविष्कार से ही जीवन है.... अर्थात् अहिंसा जीवन है।

Beauty is to be Seen
Not to Touch, Never to Destroy

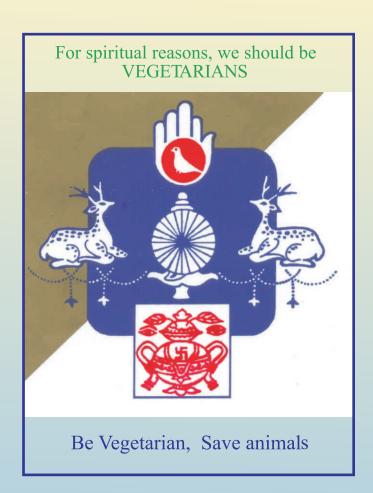


''धर्मग्रंथोका एक ही सार जीव मात्र का न करो संहार ''

भगवान महावीर ने प्राणीमात्र की अहिंसा बताई है। हिंदू धर्म में भी गोवध की विशेष मनाही फरमाई है। ईस्लाम धर्म में भी शूकर की हिंसा की मनाही फरमाई है। नास्तिक से नास्तिक इन्सान भी अपनी एवं अपने स्वजनों की हत्या की मनाही कर रहा है। अत: हिंसा प्रतिबद्ध सिद्धान्त है। सर्वथा अहिंसा का पालन अनिवार्य है।

Non-violence is a powerful and just weapon which cuts without wounding and enables the man who yields it, gets his sword that heals.

Martin Luthar King



''विश्वशांति का एक ही आधार अहिंसा ही श्रेष्ठ आचार ''

अहिंसा जैन धर्म का सर्वोच्च सिद्धान्त है। अहिंसा सभी धर्मो द्वारा पृष्ट सिद्धान्त है। अहिंसा को जीवन शैली— अहिंसा की Life Style से ही आज के युग में शांति आयेगी। किसी भी धर्म के क्रियाकांड में विशेष श्रद्धा नहीं रखनेवाले चिंतको ने भी अहिंसा का सर्वोत्कृष्ट जीवनशैली के रूप में स्वीकार किया है।

Science without religion is lame
-Albert Einstine

"Science and religion (P605;607)





''विध विध रूप सेअहिंसा प्रसिद्धा पंच आदर्शो में तुम्ही सिद्धा ''

अहिंसा के पाँच स्वरूप हैं। जीव सन्मान (अहिंसा) असत्य त्याग चौर्य त्याग अनैतिक—व्यवहार त्याग अनधिकार—आसक्ति त्याग।

पाँच महाव्रत, पाँच अणुव्रत, पंच शील एवं पंच यम ये सब अहिंसा सिद्धान्त का ही विस्तार है।





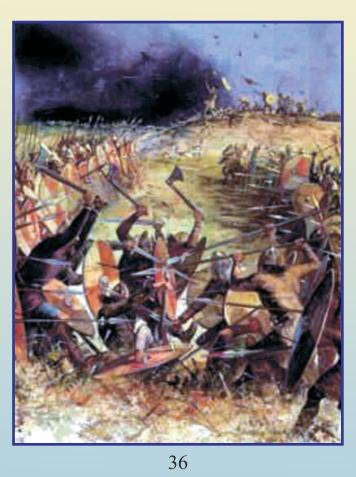
''सत्यम् शिवम् सुंदरम्''

अहिंसा अंतर का सौंदर्य है अहिंसा सृष्टि का सौंदर्य है। अहिंसा आत्म शक्ति का प्रागट्य है।

अत: अहिंसा अनिवार्य है। सब जीव को जीवन से प्रेम है, यह 'सत्य' है। किसी को भी दु:खी नहीं करना 'शिवम्' है। सब को भय मुक्त रखकर जीने देना 'सुंदरम्' है।

अतः अहिंसा ही 'सत्यम् शिवम् सुंदरम्' है।





''संत सञ्जनों का एक ही नाद '' दूर करो शस्त्रवाद ''

शस्त्रवाद ने ही हिंसा का तांडव मचाया है। हिरोशिमा एवं नागासाकी का युद्ध मानवता का कलंक है। कोई भी देश एवं राष्ट्र अपने को महान् मानेगा, शस्त्रों की दौड़ में अपना महत्त्व स्थापित करते जायेगा, परिणामत: उसको पछताना पड़ेगा।

युद्ध की हिंसा को भी रोकना है ...और शस्त्रवाद को तिलांजिल देनी है। मानव मन से युद्ध के भय को खत्म करना है।

ख्याल में रखना है मारनेवालों से बचानेवाला ही बड़ा है। विश्व के समस्त देशों को नि:शस्त्रीकरण करना है।



''देना किसी को त्रास— जीवन का है ह्रास ''

हिंसा का दूसरा उद्भव स्थान है त्रासवाद एवं आतंकवाद। त्रास देने की मनोवृत्ति विकृत मनोवृत्ति है। त्रास— जुल्म एवं आतंक जिन पर गुजरता है, उन में एक जीवन शक्ति पैदा होती है। जीजीविषा का उत्कृष्ट स्वरूप त्रासवाद के सामने ही पेश आता है। आखिर त्रास एवं आतंक का चक्र किसी का भी भला नहीं कर पाता है। अत: विश्व के राजकीय चिंतको का फर्ज है कि त्रासवाद की भावना को उन्मूलित करें।



When our mind is consciously trained to pursue towards (move in) the path of Ahimsa, every persuit of ours, whether physically or materially inclined will also 'naturally move towards the path of Ahimsa



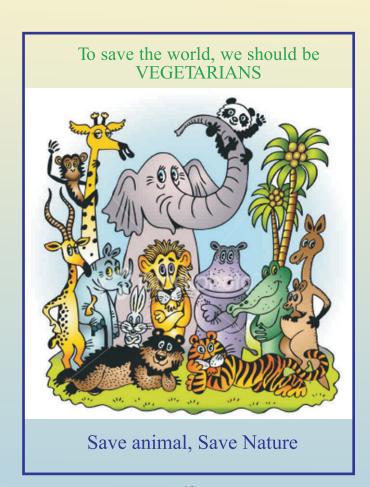
For economical reasons we should be vegetarians

''औद्योगिक क्रान्ति का कैसा योग प्राणी बनता अकस्मात् का भोग ''

औद्योगिक क्रान्ति के बाद मानव जाति ने दौड़ लगाई है। इस दौड़ में मौत की संख्या की कोई गिनती नहीं है। रण मैदान का युद्ध राजमार्ग पर आ गया है। निर्दोष लोग क्षणभर में काल के कवल बन जाते हैं। वाहन चालक सावधान बनें।

> शराब पान से दूर रहें.... ओवर टेक से दूर रहें स्वयं की सुरक्षा... सर्व की सुरक्षा है।





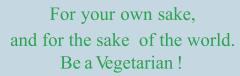
रे.....उद्योगपति ! रे....वैज्ञानिक! ''हमारा जीवन है निर्दोष...... क्यों करतेहोआप हमारा शोष.....''?

सावधान!

दवाइयों की खोज.... सौंदर्य प्रसाधन की खोज के लिए निरपराधी लाखों पशु—पक्षियों का नाश! जीवों की हिंसा से दवाइयाँ! दवा से देह सुरक्षा? और देह की शोभा? कहाँ है हमारी मानवता?

''जीवन विनाश से होगा विश्व विनाश ''





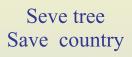


Save animal, Save Country

जागृत बनें..... जागृत बनाइए.... पापों सेबचे...पापों से बचाइए।

विवेक चक्षु को खोल दे उसका नाम विद्या....
और विद्या के धाम में हिंसा.....
''हिंसा अविवेक का अंधकार है
अहिंसा विवेक का प्रकाश है''
अमेरिका इटली, अर्जीन्टीना आदि अन्य देशों
में प्रयोग के लिए जिंदा प्राणी को मारनेकी प्रथा बंद
हो चुकी है। कम्प्यूटर के माध्यम से जीवविज्ञान का
ज्ञान दिया जाता है ... भारत तो हमारा अहिंसक देश
है.... क्या भारतीय संस्कृति में जीव—वध के द्वारा
ज्ञानार्जन कराने की प्रवृत्ति प्रशंसनीय है?

भारत में कई राज्यों मे अनावश्यक चिर फाड़ बंद हो गई है और अन्य राज्यों में बन्द करना जरूरी है। इसके लिए कानून के जानकार आगे आयें।





Save animal Save yourself



Life is nature..... Nature is for Life Nature gives us Veg.... Veg. makes our Life

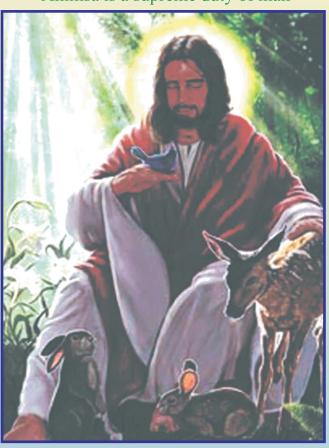
'' सव्वेजीवा वि इच्छंति.... जीविउं न मरिञ्जिऊँ....'' दशवैकालिक सूत्र ch6/st11

सभी जीवों को जीनेका अधिकार है.....

''सब्वेपाणा पियाउया पाणे य नाईवाएज्जा'' आचारांगसूत्र (ch2/3rd) ude आप जीना चाहते हो, क्यों ? इसलिए कि आप जीव हो! ध्यान में रहे और भी जीव— जीव ही है उन्हें भी जीवन प्यारा है। वे भी जीना चाहते हैं। मत मारो, मत मारो किसी को भी मत मारो।



Ahimsa is a supreme duty of man



'' सर्व धर्म की एक ही बात जीव हिंसा को मारो लात ''

हे मांसाहारी! जब तू अपने हाथ फैलायेगा तब मैं अपनी आँख बंद कर लूंगा। क्योंकि तेरे हाथ खून से सने हुए हैं।

मैं दया चाहूँगा बलिदान नहीं। ईश्वर बड़ा दयालु है, उसकी आज्ञा है कि पृथ्वी से उत्पन्न शाक-फल और अन्न से अपना जीवन निर्वाह करें।

–ईसा मसीह



JESUS CHRIST



''क्यों लेते पशुओं की जान...?'' पेट नहीं है कब्रिस्तान!

बिस्मिल्लार्हिरहमान रहिम

(जहाँ रहम है वहाँ रहीम है—कुरानशरीफ) हे मानव ! तु पशू पक्षियों की कब्र अपने पेट में मत बना —मुहम्मद अलि

कोई भी चलनेवाली चीज या जानदार, अल्लाह ने बनाई है और सबको खाने को दिया है और यह जमीन उसने सारे जानदारों (प्राणियों) के लिए बनायी है। आदमी अपनी गिजा (खाने) की तरफ देखे कि कैसे हमने बारिश को जमीन पर भेजा, जिससे तरह तरह के अनाज, फल-फूल हरियाली व घास उगते हैं।

ये सब किसे खाने के लिए दिये गये हैं। तुम्हारे और तुम्हारे जानवरों के लिए।



Veg. is Master-key (of Life)Given by god for good health.



Avoid Strictly Non-Veg... Because it is Un-Natural.

''धर्मशास्त्रों काएक ही सार जीवों के प्रतिन करें अत्याचार!

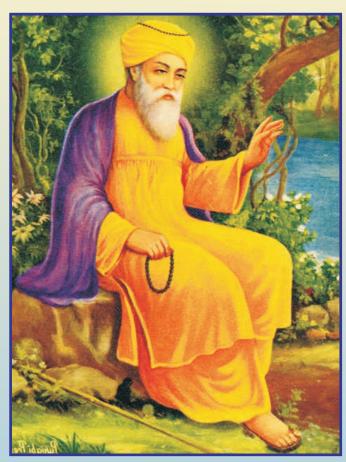
न तो पशुओं को खाना, न तो पशुओं का शिकार करना, वह हमारा जरस्थवी नेक धर्म है। मानव के तीन कर्तव्य

- 1. शत्रु को मित्र बनाना।
- 2. दानव को मानव बनाना।
- 3. अज्ञानी को ज्ञानी बनाना। (जेन्द अवेस्ता) जो दुष्ट मनुष्य पशुओं, भेडों, अन्य चौपाओं की अनीति पूर्वक हत्या करता है, उसके अंगोपांग तोड़कर छिन–भिन्न किये जायेंगे। (जेन्द अवेस्ता)



– पारसी धर्म

-Parsi Religion



'' अहिंसा का प्रवर्तन.... जीवन का है परिवर्तन''

- 1. जो व्यक्ति मांस,मछली और शराब का सेवन करते हैं, उनके धर्म, कर्म,जप,तप सब नष्ट हो जाते हैं।
- 2. क्यों किसी को मारना जब उसे जिन्दा नहीं कर सकते?
- 3. '' जे रत लागे कापडे जामा होई पलीत, ते रत पीवे मनुषा तिन क्युं निर्मल चित्त'' जिस खून के लगने से वस्त्र, परिधान अपवित्र हो जाते है, उसी रक्त को मनुष्य पीता है, फिर उसका मन निर्मल कैसे हो सकता है?



–गुरू नानक साहेब

-GURU NANAK SAHEB

Ocean of joy is to save Life, biggest gift of God



For scientific reasons, we should be VEGETARIANS

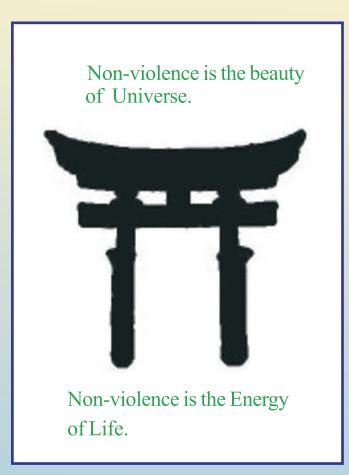
''जीवों को दीजिए अभयदान.... जीवों से पाइये दुआ दान''

पृथ्वी के हर पशु और उड़नेवाले पक्षी को तथा उस हर प्राणी को जो धरती पर रेंगता है, जिसमें जीवन है, उन सबके लिए मैंने माँस की जगह हरी पत्ती दी है।

जब तुम प्रार्थना करते हो...तो मैं उसे नहीं सुनता, यदि तुम्हारे हाथ खून से रंगे हों।

> – यहूदी धर्म -YAHUDI RELIGION





''यदि आप हो इन्सान जीवों की बढ़ाओ शान…?''

- * इन निरीह कीड़ियों और मकोड़ों की रक्षा करो।
- * जो दया करते हैं, उनकी आयु बढ़ती है।
- * संसार एक परिवार है। ''वसुधैव कुटुम्बकम् '' की भावना का विस्तार करें। ऐक्य भाव से अहिंसा का विस्तार करें।

–शिन्तोधर्म



Non-violence is the perfect royal route to peace and prosperity



Non-violence is the supreme religion.

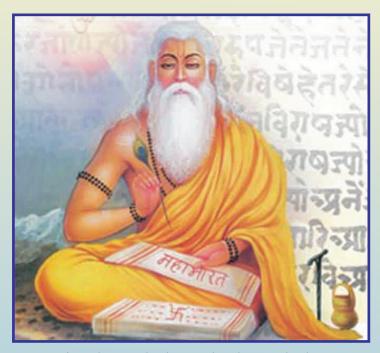
''मानवता का करते नाश..... अण्डे, मछली,मदिरा, मांस ''

मनुष्य मुख्यतः मांस, मदिरा और वासना जनित सुखों की ओर दौड़ता है। किन्तु जो धर्म में परिपूर्ण होना चाहता है वह ऐसे भोजन एवं यश की इच्छा नहीं करता।

– कन्फ्युशियस



There is one religion... the religion of love, of peace. There is one message, the message of ahimsa. Ahimsa is a supreme duty of man.



Give knowledge take knowledge 62

''तन मन करते कौन खराब, अण्डा, मछली, मांस, शराब''

सुरा मत्स्या पर्शोमांस द्विजातीनां बलिस्तथा। धूर्ते प्रवर्तितं यज्ञेनैतद् वेदेषु कथ्यते।

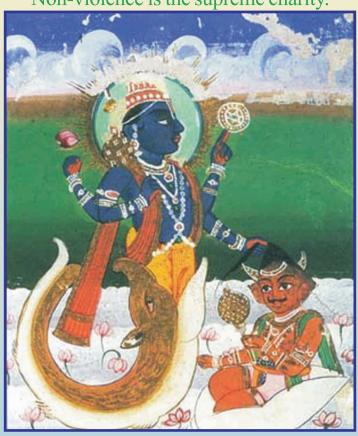
–महाभारत शांतिपर्व

मदिरा, मछली और पशुओं का मांस तथा द्विजातियों का बलिदान आदि धूर्तो द्वारा यज्ञ में प्रवर्तित हुआ है। वेदों में मांस का विधान नहीं है।

शास्त्रों में 'अज' शब्द आता है उनका मतलब पुराना चावल होता है, किन्तु कुछ धूर्त लोगों ने उसका अर्थ बकरा बताकर वैदिक धर्म से विपरित कार्य किया है। याद रखना: पुण्योपार्जन के लिए किया गया ऐसा यज्ञ आपके माथे पर पापों का ढेर डाल सकता है।







'' जो सुख देता है, वह सुख पाता है''

अनुमंताविशसिता, निहंताक्रयविक्रयी। संस्कर्ता चौपहर्ता च खादकाश्चेति घातका:।।

योगशास्त्र5/91

(कलिकाल सर्वज्ञ हेमचंद्राचार्य म.सा.)

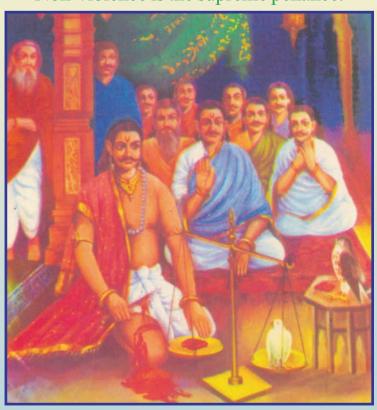
जीव वध करने की अनुमित देनेवाला, वध किये हुए जीव के शरीर के टुकड़े टुकड़े करनेवाला, वध करने वाला, मांस का क्रय विक्रय करनेवाला, परोसने या लानेवाला और मास खानेवाला— इन आठ प्रकार के मनुष्यों की गणना घातको में ही होती है।

योऽहिंसकानि भूतानि हिनस्त्यात्म सुखेच्छया। स जीवश्च मृतश्चैव न किंचित्सुख मेधते॥

5/45

जो मनुष्य अपने सुख के लिये अहिंसक प्राणियों की हत्या करता है, वह न इस जीवन में सुख पाता है न जन्म जन्मान्तर में।

Non-violence is the supreme penance.



Donate blood, give life 66

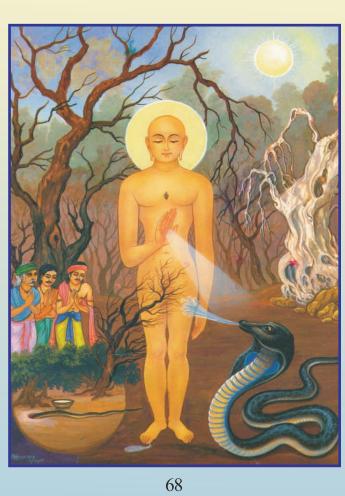
'' सर्वत्र अहिंसा की प्रतिष्ठा हो जय अहिंसा.... जय अहिंसा ''

शरणाश्रित को शरण देना..स्नेह, प्रेम एवं वात्सल्य से भर देना ही मानव जीवन की महानता है। हृदय की विशालता से ही मैत्री भाव का प्रगटीकरण एवं अहिंसा का अविष्कार होता है।

जैनों के 16 वे तीर्थंकर शांतिनाथ भगवान ने अपने पूर्व के मेघरथ राजा के भव में अपने प्राणों की परवाह किये बिना शरणाश्रित बाज पक्षी को बचाने के लिए खुद का मांस देना शुरू किया....

देवों की परीक्षा में सफल बनें...सर्वत्र अहिंसा की प्रतिष्ठा की।



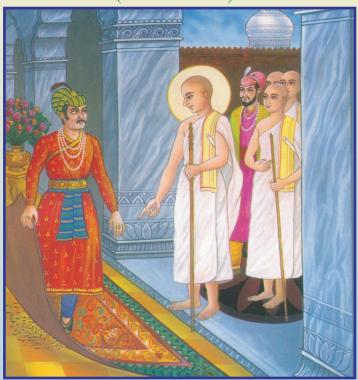


'' दिल से बहाओ करूणा स्रोत, प्रगट होगी अहिंसा की ज्योत।''

अहिंसा का अर्थ है 'करूणा'। करूणाशील व्यक्ति ही हमारे जीवन की सुरक्षा करते हैं। हम करूणामयी बनेंगे तब ही व्यक्ति से परिवार बन पायेगें। अत: करूणामयी अहिंसा अनिवार्य है।

विचरण करते हुए करूणासिन्धु भ.महावीर से अनेक लोगों ने कहा— इस जंगल में मत जाइये। दृष्टिविष सर्प का भयंकर प्रकोप है पर विश्ववत्सल्य महावीर के कदम नहीं रूके। चंडकौशिक सर्प ने प्रभु के चरणों को डस लिया। अहिंसा के अवतार भ. महावीर के चरणों से रक्त की जगह श्वेत दुग्ध की धारा बह चली। विषधर सर्प पर विषहर प्रभु की करूणासुधा बरसी, मात्र करूणादृष्टि से हाथ फैलाकर कहा...बुज्झ...बुज्झ कौशिक । अनुकंपापूरित इन शब्दों ने शरणागत चंडकौशिक के जीवन का आमूलचूल परिवर्तन किया।

Non-violence is the supreme Yagna (Sacred flame).



Non-violence is the inner beauty. 70

'' अहो जैन धर्म! अहो जीवदया पालक गुरूदेव ''

पधारिए महाराज श्री..... प्रथम मेरे प्रांगण में आप पदार्पण कीजिए...'

महाराज: जैन साधु का आचार है, पथ पर दृष्टि करके ही चलना ... सूक्ष्म जीवों की हिंसा न हो जाय....'

'जी गुरूदेव ' गलीचे पर जीवजन्तु नहीं है

महाराज: गलीचे के नीचे छोटे जीव होने की पूर्ण संभावना है।

बादशाह: गलीचे उठाते ही सूरिजी की अहिंसा प्रियता को वंदन कर उठे।

अरे ! बादशाह अकबर ने अपने राज्यों में जैन आचार्य हीर सूरीश्वरजी महाराज के उपदेश से साल में छ मास तक जीव हिंसा नहीं करने का फरमान निकलवाया। धन्य है अप्रमादी हीरसूरीश्वरजी की जीवंत करूणा।

Non-violence is the supreme fruit.



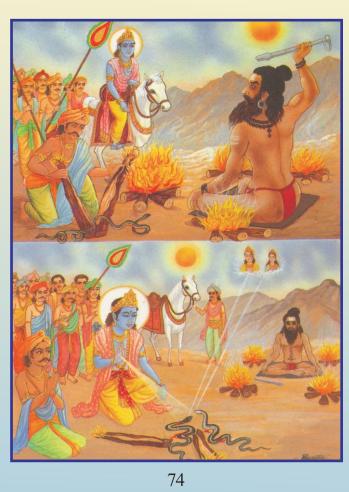
Non-violence is the supreme friend.

'' प्रवृत्ति में अहिंसा.... प्ररूपणा में अहिंसा.... प्रवर्तन में अहिंसा....''

अकबर: जी गुरुदेव आज्ञा फरमाईए, आपकी आवश्यकताको में पूर्ण करूंगा। सूरिजी: जैन साधु का आभूषण ही अहिंसा है। मेरी आवश्यकता पूर्ण करने की तेरी भावना है तो एक ही बात है....

बंद पिंजडे को खुल्ला कर.... मुक्त गगन में चिड़ियाँ को विचरण करने दे।

तुरन्त ही आचार्यश्री के आचार से प्रभावित अकबर बादशाह ने चिड़ियाँ की जीभ एवं मांस नहीं खाने की प्रतिज्ञा की। हजारों चिड़ियों को नील गगन में मुक्त कर दिया।



'' अन्तर्यामी—दया के स्वामी प्रभु पार्श्व ''

जैनों के 23 वें तीर्थंकर प्रभु पार्श्वनाथ कमठ को प्रतिबोध कर रहे हैं।

रे तापस! कष्टमय तप क्यों कर रहा है ? यह यज्ञ कोई पुण्यमय क्रिया या कर्तव्य नहीं है जलते हुए काष्ठ को बाहर निकाल के देख....

तापस ने काष्ठ को फाड़कर देखा तो जिंदा सांप का जोड़ा निकला।

कारूण्य निधि पार्श्वकुमार ने इस सांप के जोड़े को बचाया... विश्व में अहिंसा का सिद्धान्त प्रतिष्ठित किया।



अहिंसा ही अमृत है - प्रश्नावली

1.	अहिंसा हमें क्या सिखाती है ?
	अ) साथ-साथ गाने की कला ब) साथ साथ रहने की कला
	क) साथ–साथ उडने की कला
2.	जब सारी दुनिया को हम एक परिवार मानना चाहते है तो
	की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए।
	अ) हिंसा ब) द्वेष क) अहिंसा
3.	दैवत्व के साथ रहनेवाली गोमाता किसका प्रतीक है
	अ) समाज ब) गाँव क) विश्व
4.	दर्दको अभिव्यक्त करता है।
	अ) खुशी ब) स्वार्थ क) हिंसा
5.	संवेदना के बिना रहनेवाला मनहै
	अ) हवा ब) पत्थर क) पानी
6.	अहिंसा के समानार्थक शब्दहै
	अ) शांति-क्षमा ब) क्रोध-द्वेष क) स्वार्थता-लोभ
7.	शांतिका भंग हुआ तो क्या होता है ?
	अ) खतरा ब) हिंसा क) अहिंसा
8.	अहिंसा के तत्व है?
	अ) 3 ब) 2 क) 5

```
9. पंचशील और पाँच.....अहिंसा तत्व के विस्तरण है?
   अ)नियम
              ब) यम क) ध्यान
10. ....मन की बीमारी है।
              ब) दोस्ती
   अ) लगाव
                        क) क्षमा
11.प्राणि हिंसा करके हम .....बनाते है।
              ब) खुशी
                        क) पीठेपकरण
   अ) दवा
12. जीव नाश करने से संसार का....होता है।
   अ) सृष्टि
              ब) नाश क) परिवर्तन हीन
13.विद्या..... की आँख खोलती है।
   अ) अज्ञान ब) भेदभाव
14. सब जीवियों को जीवित रहने का.....है।
   अ) अवसर ब) हक
                         क) उद्देश्य
15.जब..... है तब भगवान है।
   अ) असत्य ब) करूणा
                                क) अशुद्धता
16.पेट.....नहीं है।
   अ) असत्य ब) नरक
                        क) शमशान
17. मदिरा.....की सरलता को नाश करती है।
   अ) मृत्यु ब) जीवन
                         क) अहिंसा
18 जहां.....है, वहां रहीम है। – कुरानशरीफ
            ब) द्वेश क) ईर्ष्या
   अ) रहम
```

19.जोहै, वह ज्यादा साल तक जिंदा रहता है।
अ) दयावान ब) निर्दयी क) बीमार
20.एकताका विस्तार करती है ।
अ) अहिंसा ब) हिंसा क) ईर्ष्या
21. सभी धर्मों का एक संदेश है ,अपनाओ।
अ) असत्य ब) हिंसा क) अहिंसा
22. 'सर्जन ' है
अ) अहिंसा और विकास ब) विकास क) अहिंसा
23.सृष्टि पर एकाधिकार स्थापित करने की चेष्टाहै।
अ) विकास ब) हिंसा क) प्रगति
24.निम्नांकित कथन किस–किसने कहे
अ) 'स्व की वेदना तो बुद्धू भी जानता है '।
ब) 'हे मांसाहारी ! जब तूँ अपने हाथ फैलायेगा तब मैं अपनी आँख
बंद कर लूंगा क्योंकि तेरे हाथ खून से सने हुए है।'
क) 'क्यों किसी को मारना जब उसे जिन्दा नहीं कर सकते '
ड) 'हे मानव!पशु—पक्षियों की कब्र अपने पेट में मत बना '
25.पारसी धर्म में मानव के तीन कर्तव्य क्या बताए गए हैं ।
26.किन्ही दो देशों के नाम लिखिए जहाँ प्रयोग के लिए जिन्दा प्राणी
को मारने की प्रथा बद हो गई है।

Keep in Mind-One who is not actively Kind is Cruel "We can be effective only if we can act together, with one voice and common purpose"



-U.N.Secretary General Ban Ki-Noon

GRATITUDE

Oh! What a lovely and live experience to edit and translate the book 'AHIMSHA HI AMRUTAM". This small but very precious holy book has utmost essential and important message for the entire Humanity of Globe. Non-violence is the perfect royal route to peace and prosperity for every Nation without killing soldiers and wasting useful money for wars. Let us love, have peace and harmony and whole world would be the beautiful heavenly Garden for Living beings!

My humble gratitude at holy feet of Shri Acharya **Rajyashsoorijee**Maharaj and my reverence to **Prof. Maharaj Saheb** for valuable guidance for editing work and trust for qualitative approach. and thanks to Vijaya Jain of Chennai for her assistance Translation in Hindi.

Dulichandji Jain, Chennai

आपके पास धन नहीं है, परवाह नहीं। आपके पास तन नहीं है, परवाह नहीं। आपके पास में मन अवश्य है बस। इस मन से भी आप अहिंसा को समर्पित हो जाओ तो मुझे विश्वास है, आपके मन के पीछे, आपका तन, आपका धन दौड़कर अहिंसा की सेवा में आ जायेगा।

''अर्हम''

परम् पूज्य आचार्य देव विजय राजयश सूरीश्वरजी म. ने अनेक ग्रन्थों के रत्नाकर से अहिंसा मुक्ता चुन कर एक सुन्दर माला में गुंथित किया है। आपकी यह कृति अनेक लोगों को अहिंसा प्रेमी बनायेगी इसी मंगलमनीषा के साथ विजया कोटेचा, अम्बातुर